● **सुनो, समझो और गाओ :**

# २. काटो खेताँ काटो रे!

*–सुलेमान खतीब*

**जन्म :** २६ दिसंबर १९२२ **मृत्यु :** २२ अक्तूबर१९७८ **रचनाएँ :** 'केवड़े का बन' **परिचय :**आपने दक्खिनी हिंदी में अनेक नाटक लिखे हैं। इस कविता में दक्खिनी हिंदी का प्रयोग किया गया है। कवि ने श्रमप्रतिष्ठा को महत्त्व देते हुए खेत से प्राप्त होने वाली संपत्ति एवं समृद्धि का गुणगान किया है।

काटो खेताँ काटो रे,
घर–घर रोटी बाँटो रे।

खून–पसीना पेरो रे,
अनाज के भुट्टे काटो रे।

खेत में लछमी बोले रे,
सोना–चाँदी डोले रे।

पाक पवन के पल्लों में,
मोती–मूँगे रोले रे।

काटो खेताँ काटो रे,
घर–घर रोटी बाँटो रे।

दुनिया न्हाटी न्हाटेंगे,
झाड़–झकोले छाँटेंगे।

❑ विद्यार्थियों को हाव–भाव, लय–तालसहित कविता कक्षा में सुनाएँ। कविता में आए दक्खिनी हिंदी के शब्दों का उच्चारण एवं अर्थ समझाएँ। कविता का एकल, गुट एवं समूह में सस्वर पाठ कराएँ। कविता की साभिनय प्रस्तुति कराएँ।

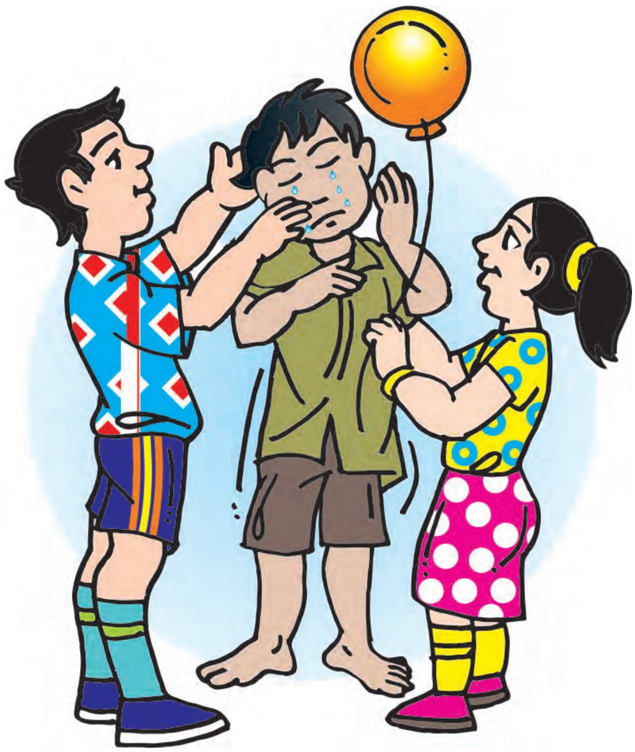

नदी-नाले पाटेंगे,
नई फसल काटेंगे ।

आँखों से आँसू पोछेंगे,
जगत में खुशियाँ बाँटेंगे ।

काटो खेताँ काटो रे,
घर-घर रोटी बाँटो रे ।

खून-पसीना पेरो रे,
अनाज के भुट्टे काटो रे ।

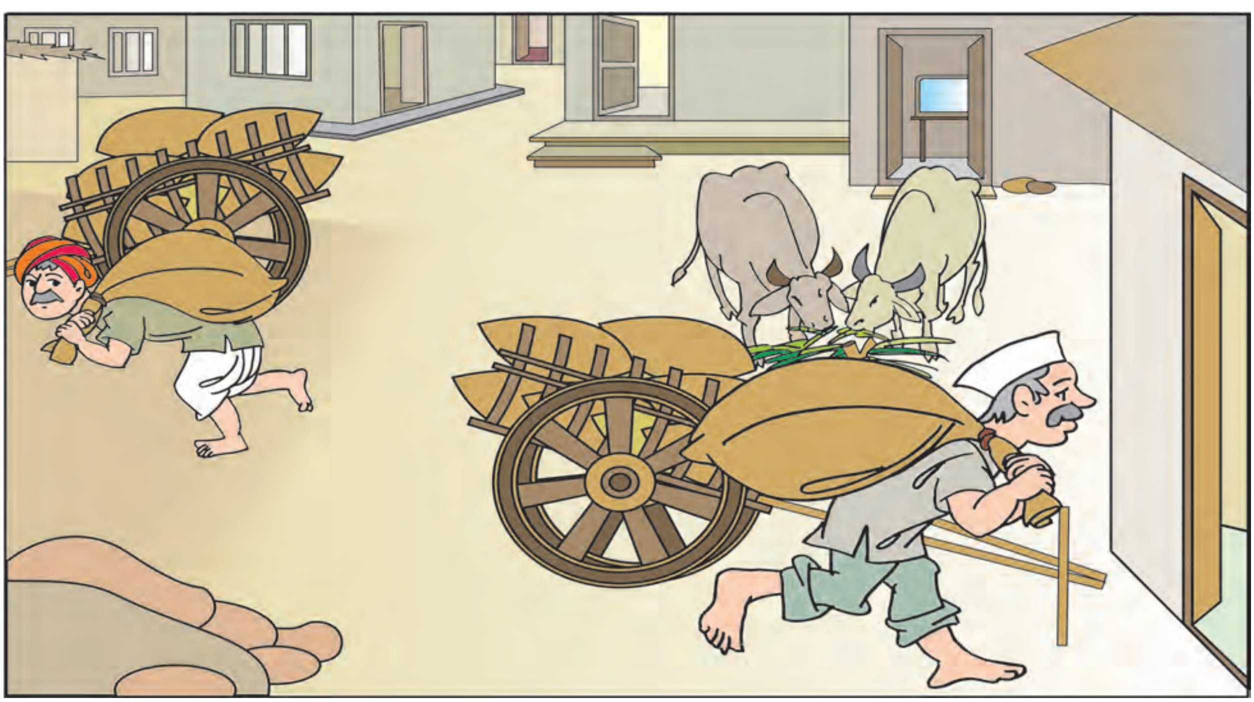

**पढ़ो :**

हिंदी भारत संघ की राजभाषा है । भारत की गंगा-यमुना संस्कृति की छाप हिंदी पर भी दिखाई देती है । हमारे देश में जितनी सरलता से नए विचार, सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ रच-बस कर यहीं की हो गई हैं, वैसे ही हिंदी में भी देशी-विदेशी भाषाओं के अनेक शब्द घुल-मिलकर इसके अभिन्न अंग बन गए हैं । हिंदी भारत की आत्मा है ।